शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो के साथ

# समानता, स्वतंत्रता और बंधुता के पक्षधर डॉ. भीमराव अम्बेडकर

संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर (1891-1956) समानता, स्वतंत्रता और बंधुता के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने जाति-आधारित भेदभाव को खत्म कर, संवैधानिक अधिकारों, शिक्षा और 'हिंदू कोड बिल' के माध्यम से हाशिए पर पड़े वर्गों व महिलाओं के लिए समतामूलक समाज की नींव रखी। वे भारत के पहले कानून मंत्री और संविधान के मुख्य निर्माता थे।

**समानता के पक्षधर के रूप में डॉ. अम्बेडकर के प्रमुख योगदान:**-भारतीय संविधान का निर्माण: अम्बेडकर ने संविधान के माध्यम से अस्पृश्यता का अंत (अनुच्छेद 17) किया और कानून के समक्ष समानता सुनिश्चित की। उन्होंने शोषित वर्गों को मुख्यधारा में लाने के लिए आरक्षण की व्यवस्था की। सामाजिक न्याय: वे जाति विहीन समाज के समर्थक थे, जहां व्यक्ति का मूल्यांकन जन्म के बजाय उसकी योग्यता से हो। उन्होंने दलितों के मुक्तिदाता के रूप में काम किया। महिला सशक्तिकरण: उन्होंने महिलाओं को शिक्षा, समानता, और हिंदू कोड बिल के जरिए विवाह, तलाक व संपत्ति में अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया। शिक्षा का महत्व: उन्होंने कहा था,

'शिक्षित बनो, संगठित रहो, और संघर्ष करो ', जिसे उन्होंने सामाजिक अन्याय को चुनौती देने का मूल मंत्र माना। राजनीतिक और सामाजिक समानता: उन्होंने 1928 में ही सभी नागरिकों के लिए सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार (वोट देने का अधिकार) की वकालत की थी। डॉ. अम्बेडकर ने यह स्पष्ट किया कि राजनीतिक लोकतंत्र का कोई मूल्य नहीं है यदि वह सामाजिक लोकतंत्र (समानता) पर आधारित न हो।

**डॉ. अम्बेडकर के प्रमुख योगदान और विचार:**-संविधान निर्माता (Constitution Maker): वे संविधान सभा की ड्राफ्टिंग कमेटी (प्रारूप समिति) के अध्यक्ष थे। उन्होंने एक ऐसे संविधान का निर्माण किया जो जाति, धर्म, लिंग के भेदभाव के बिना सभी नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान करता है। समानता के पक्षधर

(Champion of Equality): अम्बेडकर का मानना था कि राजनीतिक लोकतंत्र तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक उसके मूल में सामाजिक लोकतंत्र न हो। उन्होंने सामाजिक समानता के लिए कानून के शासन की बात कही। सामाजिक न्याय (Social Justice): उन्होंने छुआछूत जैसी कुरीतियों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी और दलितों, पिछड़ों व महिलाओं के उत्थान के लिए आजीवन संघर्ष किया।

महिला सशक्तिकरण: उन्होंने महिलाओं को समान शिक्षा, विरासत और संपत्ति का अधिकार देने की वकालत की। शिक्षा का महत्व: उन्होंने शोषितों को 'शिक्षित बनो, संगठित रहो, और संघर्ष करो' का नारा दिया। डॉ. अम्बेडकर को 1990 में मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था।

**सूबेदार रावत गर्ग उण्डू (राज) स्वतंत्र लेखक व साहित्यकार, पत्रकार। श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान**

# समाजसेवी कवि डॉ. सुनील 'सावन' सम्मानित

***सावन साहित्य सेवा सदन ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं साहित्यकार डॉ. सुनील 'सावन' को हिंदी साहित्य भारती, गोरखपुर एवं निराला शब्द संवाद मंच पडरौना, कुशीनगर ने संयुक्त रूप से सम्मानित किया है। कवि सावन मूलतः अमवा बाजार, (अटल नगर), नगर पंचायत रामकोला, जनपद कुशीनगर, उत्तर प्रदेश के निवासी हैं जो पद्य पुरस्कार के लिए नामित हो चुके हैं।***

वर्तमान में आप पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय गांगरानी, कुशीनगर में स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी पद पर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। साहित्य सेवा एवं समाज सेवा के लिए आप राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न सम्मानों से नवाजे जा चुके हैं। आपको बांग्लादेश ने समानता का आकाशदीप सम्मान से सम्मानित किया है।

शिक्षा जगत में उल्लेखनीय योग्यता हेतु केंद्रीय विद्यालय संगठन, नयी दिल्ली ने भी आपको सम्मानित किया है। 5 अगस्त 1993 में जन्मे युवा कवि डॉ. सुनील 'सावन' को सम्मानित करते हुए निराला शब्द संवाद मंच के संस्थापक डॉ. ओम प्रकाश जी ओम तथा काशी हिन्दी विद्यापीठ वाराणसी के संस्थापक इंद्रजीत निर्भीक ने आपकी साहित्यिक गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की।

बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुशीनगर के प्रोफेसर (डॉ.) गौरव के सारगर्भित वक्तव्य से प्रबुद्ध श्रोतागण लाभान्वित हुए। कवि सिद्धनाथ वाराणसी, मधुर साहित्य एवं सामाजिक संस्था के अध्यक्ष मधुसूदन मधुर, विमर्श साहित्यिक संस्था के अध्यक्ष राजकुमार भट्ट, जनक नंदिनी पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ. वीरेंद्र कुसुमाकर, डॉक्टर गीता अपराजिता, कवयित्री माधुरी मधु, प्रधानाचार्य शैलेंद्र दत्त, कवि सुभाष गोरखपुर, हास्य कवि अवध किशोर अवधू, आकाश महेश पुरी, उगम जी मगन इत्यादि साहित्यकारों एवं श्रोताओं की गरिमामय उपस्थित रही।

## जलियांवाला बाग

# वह घाव जो आज भी रिसता है

13 अप्रैल 1919—यह सिर्फ एक तारीख नहीं, बल्कि भारतीय इतिहास का वह पन्ना है जिसे जितनी बार पढ़ा जाए, उतनी ही गहरी पीड़ा महसूस होती है। जलियांवाला बाग हत्याकांड की बरसी हर साल हमें उस सच्चाई के सामने खड़ा कर देती है, जिसे हम चाहकर भी भुला नहीं सकते। पंजाब के अमृतसर में स्थित जलियांवाला बाग आज एक स्मारक है, लेकिन इसकी मिट्टी में आज भी उस दिन की चीखें, डर और बेबसी जैसे जिंदा महसूस होती हैं।

बैसाखी का दिन था—खुशियों और मेलों का दिन। लोग अपने परिवारों के साथ बाहर निकले थे। कुछ रॉलेट एक्ट के विरोध में शांतिपूर्वक सभा करने आए थे, तो कुछ सिर्फ त्योहार मनाने। किसी ने नहीं सोचा था कि कुछ ही देर में यह जगह इतिहास की सबसे दर्दनाक घटनाओं में बदल जाएगी। रॉलेट एक्ट ने पहले ही लोगों के भीतर असंतोष भर रखा था, लेकिन जो होने वाला था, उसने उस असंतोष को हमेशा के लिए आक्रोश में बदल दिया।

शाम के समय, जनरल डायर अपने सैनिकों के साथ बाग में दाखिल हुआ। बिना कोई चेतावनी दिए, बिना भीड़ को तितर-बितर होने का मौका दिए, उसने गोली चलाने का आदेश दे दिया। अचानक गोलियों की आवाज गूंज उठी। लोग भागने लगे, चीखने लगे, एक-दूसरे को संभालने लगे, लेकिन चारों ओर दीवारें थीं और बाहर निकलने का केवल एक संकरा रास्ता। कुछ ही मिनटों में वह बाग, जो कुछ समय पहले तक लोगों की हंसी से गूंज रहा था, मौत की खामोशी में बदल गया। उस दिन की सबसे भयावह तस्वीर 'शहीदी कुएं' से जुड़ी है, जहां सैकड़ों लोग अपनी जान बचाने के लिए कूद गए। आज भी वह कुआं वहीं है—शांत, लेकिन भीतर से जैसे उस दिन की दहशत को संजोए हुए। बाग की दीवारों पर मौजूद गोलियों के निशान आज भी साफ दिखाई देते हैं। वे किसी किताब की कहानी नहीं, बल्कि उस सच्चाई के निशान हैं, जिसे मिटाया नहीं जा सका। प्रवेश का वही संकरा रास्ता आज भी यह अहसास कराता है कि उस दिन वहां मौजूद लोगों के पास बचने का कोई रास्ता क्यों नहीं था।

इस घटना में कितने लोग मारे गए, इसका सही आंकड़ा आज भी विवाद का विषय है। अंग्रेजी सरकार ने संख्या कम बताई, लेकिन भारतीय स्रोतों के अनुसार मृतकों की संख्या कहीं अधिक थी। यह अंतर केवल आंकड़ों का नहीं, बल्कि उस सच्चाई का प्रतीक है जिसे लंबे समय तक दबाने की कोशिश की गई।

जलियांवाला बाग का यह नरसंहार केवल एक घटना नहीं रहा—यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का निर्णायक मोड़ बन गया। स्वतंत्रता वीरों ने इसके बाद अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन को और तेज किया। देश के हर कोने में इस घटना की गूंज सुनाई दी और लोगों के भीतर आज़ादी की इच्छा और भी प्रबल हो गई। लेकिन जलियांवाला बाग की असली कहानी केवल राजनीति या इतिहास की नहीं है—यह इंसानी दर्द की कहानी है। यह उन परिवारों की कहानी है, जो उस दिन टूट गए। यह उन बच्चों की कहानी है, जिन्होंने अपने माता-पिता को खो दिया और अचानक बड़े हो गए। यह उन माताओं की कहानी है, जिनकी गोद हमेशा के लिए खाली हो गई।

आज जब हम जलियांवाला बाग जाते हैं, तो वहां जलती अनन्त ज्योति हमें यह याद दिलाती है कि शहादत कभी व्यर्थ नहीं जाती। हर साल 13 अप्रैल को लोग वहां पहुंचकर श्रद्धांजलि देते हैं, लेकिन असली श्रद्धांजलि शायद यह है कि हम उस घटना को सिर्फ एक याद बनाकर न छोड़ दें, बल्कि उससे कुछ सीखें। समय बीत चुका है, देश आज़ाद हो चुका है, लेकिन जलियांवाला बाग का दर्द आज भी उतना ही सजीव है। यह हमें बार-बार चेतावनी देता है कि जब सत्ता निरंकुश हो जाती है, तो सबसे पहले इंसानियत ही कुचली जाती है। यह हमें याद दिलाता है कि आज़ादी केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी भी है। शायद यही वजह है कि जलियांवाला बाग आज भी सिर्फ एक जगह नहीं, बल्कि एक एहसास है—एक ऐसा एहसास, जो हमें भीतर तक झकझोर देता है और पूछता है—क्या हम उस बलिदान को सच में समझ पाए हैं?

**अतुल ठाकुर**
**सरकाघाट, हिमाचल प्रदेश**
**मोबाइल: 6239822304**
**ईमेल: atulthakurvyvv@gmail.com**

शिक्षक पात्रता परीक्षा की अनिवार्यता समाप्त करने की मांग

# शिक्षको ने रैली निकालकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा

**भीकनगांव| इंदौर समाचार:** लोक शिक्षण संचालनालय एवं आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग द्वारा प्रदेश के समस्त शिक्षकों के लिए शिक्षक पात्रता परीक्षा टी ई टी उत्तीर्ण करने हेतु निर्देश जारी किये गये है। विरोध में ब्लॉक के शिक्षक शिक्षिकाओं ने तपती दोपहरी में रैली निकाल कर प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नाम नायब तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा।

रैली में शिक्षको द्वारा 25 साल की सेवा का मान- नहीं चाहिए फिर से इम्तिहान टी ई टी थोपना बंद करो शिक्षक का सम्मान देश का अभिमान, शिक्षकों का अपमान-नहीं सहेगा हिंदुस्तान,टी ई टी परीक्षा निरस्त करो निरस्त करो के नारे लगाए। रैली से पूर्व आयोजित सभा में अध्यापक शिक्षक संयुक्त मोर्चा के कैलाश मोरे, सुनीता वर्मा राजेश सोहनी, आयुष वर्मा, संजय चावड़ा, धर्मेंद्र गुप्ता, राजेश पेंडारे, विनीता ततपाल, सीमा गुप्ता, कालूराम भास्करे, दीपचंद वर्मा,मुकेश पाटीदार, संतोषी हरियाले, भावना दांगी,संतोषी साठे, इंदिरा करेडा, राहुल पाटीदार ने कहा कि शिक्षक पात्रता परीक्षा लिया जाना न्याय संगत नहीं है शिक्षा के अधिकार अधिनियम के पूर्व नियुक्त शिक्षक को पात्रता परीक्षा के दायरे से बाहर रखना चाहिए ने भी शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षक पात्रता परीक्षा अव्यवहारिक है जिसे निरस्त करना होगा ज्ञापन का वाचन नवीन कुशवाह ने किया।

साइबर सैल ने साइबर फ्रॉड की रिफंड कराई धनराशि

# इंदिरापुरम थाने के साइबर सैल के तेजतर्रार टीम ने पीड़ितों के चहरे पर मुस्कान लौटाई

***गाजियाबाद। पुलिस कमिश्नरेट गाजियाबाद के पुलिस आयुक्त जे. रविंद्र गौड़ के निर्देश के क्रम में थाना इंदिरापुरम के साइबर सैल निरंतर साइबर फ्रॉड के पीड़ितों की धनराशि को वापस दिलाने का कार्य कर रहा है।***

इसी कड़ी में साइबर सैल के प्रभारी अनिल वर्मा ने 1,50,000.00 रूपये अमृता पत्नी अभिषेक मिश्रा एवं 91,997.00 रूपये की धनराशि अपूर्व पुत्री जय प्रकाश शर्मा की वापसी कराई। पीड़ितों ने साइबर फ्रॉड के माध्यम से ली गयी अपनी धनराशि को वापसी करने वाली इंदिरापुरम साइबर सैल की पुलिस टीम का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद बोला है।

धनराशि वापसी करने वाली साइबर सैल की इस तेज-तर्रार पुलिस टीम में इंस्पेक्टर अनिल वर्मा, सब इंस्पेक्टर सचिन व कांस्टेबल पुष्पेंद्र आदि शामिल रहे।

**दीपक कुमार त्यागी**

# AI और समावेशी शिक्षा

***कभी-कभी एक वाक्य पूरी बहस को बदल देता है। एक दृष्टिबाधित छात्र ने लिखा— 'पहली बार मुझे लगा कि मैं भी देख सकता हूँ। उसने AI की मदद से एक तस्वीर को 'समझा' था—सिर्फ देखा नहीं, महसूस किया। यही AI की ताकत है। और यही उसकी जिम्मेदारी भी। आज.ड्ड शिक्षा में तेजी से घुस रहा है। कुछ लोग इसे क्रांति कह रहे हैं, कुछ खतरा।***

सच क्या है? सच यह है–AI एक औज़ार है। और हर औज़ार की तरह, उसका असर इस बात पर निर्भर करता है कि हम उसका इस्तेमाल कैसे करते हैं। समावेशी शिक्षा के संदर्भ में AI एक वरदान हो सकता है। दृष्टिबाधित छात्रों के लिए–te&t-to-speech, image description. श्रवण बाधित छात्रों के लिए–real-time transcription. dysle&ia वाले छात्रों के लिए–सरल भाषा में सामग्री। यानी पहली बार, शिक्षा सच में 'व्यक्तिगत' हो सकती है।

लेकिन यहाँ एक सवाल उठता है– क्या हम इसके लिए तैयार हैं? क्योंकि तकनीक से ज्यादा चुनौती इंसान की है। मैंने कई छात्रों को देखा है–जो AI का इस्तेमाल करते-करते खुद सोचना भूल रहे हैं। वे असाइनमेंट जमा करते हैं, लेकिन शब्द उनके नहीं होते। यह एक खामोश खतरा है। अगरAI सोचने की जगह ले ले, तो सीखने का क्या होगा? इसलिए यहाँ शिक्षक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

अब शिक्षक का काम सिर्फ पढ़ाना नहीं है– बल्कि यह भी सिखाना है कि तकनीक का सही इस्तेमाल कैसे किया जाए। और एक और गंभीर मुद्दा–डेटा। जब छात्र AI tools का इस्तेमाल करते हैं, तो वे अपनी निजी जानकारी साझा करते हैं। यह जानकारी कहाँ जाती है? कौन उसे इस्तेमाल करता है? इन सवालों के जवाब अभी स्पष्ट नहीं हैं। तो क्याAI से डरना चाहिए? नहीं। लेकिन आँख बंद करके अपनाना भी ठीक नहीं। हमें संतुलन बनाना होगा– तकनीक और मानवीयता के बीच। समावेशी शिक्षा का असली अर्थ क्या है? सिर्फ यह नहीं कि हर छात्र कक्षा में बैठा हो। बल्कि यह कि हर छात्र वहाँ सम्मान के साथ सीख सके।AI इसमें मदद कर सकता है। लेकिन अंत में फर्क एक शिक्षक ही लाता है– जो छात्र को एक 'केस' नहीं, एक 'इंसान' समझता है। तो सवाल का निष्कर्ष?AIभविष्य है–लेकिन इंसान उसकी दिशा तय करेगा। अगर हम समझदारी से चले, तो यह रोशनी है। अगर नहीं–तो यही रोशनी एक नई परछाईं भी बना सकती है।

**आनंद मोहन मिश्र**
**विवेकानंद केंद्र विद्यालय जयरामपुर चांगलांग जनपद अरुणाचल प्रदेश दूरभाष - 9436870174**

## अंबेडकर जयंती :

# सामाजिक न्याय, समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रेरक पर्व

भारत में प्रति वर्ष 14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती बड़े सम्मान और उत्साह के साथ मनाई जाती है। यह दिन भारत के महान संविधान निर्माता, समाज सुधारक और दूरदर्शी विचारक डॉ.भीमराव अंबेडकर के योगदान की याद दिलाता है। यह केवल एक स्मृति दिवस ही नहीं है,बल्कि आत्ममंथन, सामाजिक जागरूकता और उनके विचारों ,आदर्शों को आत्मसात करने का अवसर भी है।

**जीवन परिचय :**-डॉ.अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के महू में हुआ था। उन्होंने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त की और उच्च अध्ययन के लिए विदेश भी गए। कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने विश्व स्तर पर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। वे एक महान अर्थशास्त्री, विधिवेत्ता और समाजशास्त्री थे।

**संविधान निर्माण में योगदान :-** डॉ.अंबेडकर भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार थे। उन्होंने संविधान में समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांतों को विशेष महत्व दिया। उनके नेतृत्व में तैयार संविधान ने सभी नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान किए। उन्होंने विशेष रूप से समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित की।

**सामाजिक सुधार के क्षेत्र में योगदान :-** डॉ.अंबेडकर ने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव और असमानता के खिलाफ आवाज उठाई तथा दलितों व वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए जीवन भर संघर्ष किया। वे महिलाओं के अधिकारों के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने लैंगिक समानता पर भी बल दिया था। उनका संघर्ष एक समतामूलक समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण रहा। उनके ही अथक प्रयासों का परिणाम है कि आज भारत का संविधान हर नागरिक को समान अधिकार और स्वतंत्रता प्रदान करता है।

अंबेडकर जयंती हमें यह याद दिलाती है कि हमें एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहां समानता, न्याय और भाईचारा हो। यह दिन हमें अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक करता है और प्रेरित करता है कि हम सामाजिक भेदभाव को समाप्त कर एक समतामूलक समाज की स्थापना करें।

**शिक्षा और विचारधारा :**-उनका प्रसिद्ध संदेश था: 'शिक्षित बनो,संगठित रहो और संघर्ष करो। वे मानते थे कि शिक्षा ही समाज को बदलने का सबसे प्रभावी साधन है। उन्होंने तर्क, विज्ञान और आधुनिक सोच को अपनाने की प्रेरणा दी। उनके विचार आज भी युवाओं को प्रेरित करते हैं। डॉ.अंबेडकर का मानना था कि 'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो '–यह उनका मूल मंत्र था, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम बताया और समाज के हर वर्ग को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा भी है की 'शिक्षा शेरनी का वह दूध है जिसको जो जितना पियेगा उतना ही दहाड़ेगा।

**वर्तमान में प्रासंगिकता :-** वर्तमान समय में सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के बीच उनके विचार और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। उनका जीवन हमें सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी शिक्षा और संघर्ष से सफलता प्राप्त की जा सकती है। वे लोकतंत्र, न्याय और मानवाधिकारों के सशक्त प्रतीक हैं।

**अंबेडकर जयंती का महत्व :**-यह दिन हमें समानता और सामाजिक न्याय के मूल्यों की याद दिलाता है। देशभर में इस दिन रैलियां, संगोष्ठियां और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। लोग उनके विचारों को अपनाने और समाज सुधार के लिए संकल्प लेते हैं। यह दिन एक समावेशी और प्रगतिशील भारत के निर्माण का संदेश देता है।

**हमारी जिम्मेदारी :**-हमें उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। समाज में भेदभाव और असमानता को समाप्त करने के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना चाहिए।

**निष्कर्ष :**-डॉ.अंबेडकर का जीवन केवल इतिहास का एक अध्याय नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक है। अंबेडकर जयंती हमें यह प्रेरणा देती है कि हम एक ऐसे समाज का निर्माण करें जहां हर व्यक्ति को समान अवसर और सम्मान मिले। इस पावन अवसर पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके विचारों को आगे बढ़ाते हुए एक न्यायपूर्ण,समतामूलक और सशक्त भारत के निर्माण में अपना योगदान देंगे। अतः इस अंबेडकर जयंती पर हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके दिखाए मार्ग पर चलेंगे और एक बेहतर, न्यायपूर्ण और समावेशी भारत के निर्माण में अपना योगदान देंगे।

**डॉ.राजेन्द्र सिंह गुर्जर**
**प्रोफेसर, प्राचार्य**
**उच्च शिक्षा विभाग,राजस्थान**

# जिया माँ साहित्य मंच द्वारा 48 वीं काव्य गोष्ठी एवं प्रथम विचार संगोष्ठी का सफल आयोजन

***बेंगलुरु 12 अप्रैल जिया माँ साहित्य मंच द्वारा 48, वीं काव्य गोष्ठी एवं प्रथम विचार संगोष्ठी का आयोजन अत्यंत गरिमामय एवं सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम में देश के सुप्रसिद्ध साहित्य प्रेमियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।***

कार्यक्रम के प्रथम सत्र 'विचार संगोष्ठी' का शुभारंभ सरस्वती वंदना से डॉ. शैलजा रेला द्वारा किया गया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. पी. मैथिली राव ने की एवं प्रेरणा साहित्य मंच की संस्थापिका डॉ. वीणा गुप्ता मेदिनी मुख्य अतिथि रहीं।

संस्थापिका रीता सिंह, सह संस्थापक लेफ्टिनेंट किशोर सिंह राठौर व विशिष्ट अतिथि डॉ.शैलजा , भगवती सक्सेना गौड़, सोनिका शर्मा , आशा रानी शरण, डॉ कमलेश मलिक , चंद्रमोहन नीले , मीनू परियानी , डॉ.रामनिवास तिवारी की उपस्थिति रही। इस सत्र में 'वर्तमान समय में रिश्तों की बदलती परिभाषा' विषय पर वक्ताओं ने अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र 'काव्य गोष्ठी' का शुभारंभ संतोष पारीक द्वारा माँ जिया के भजन के साथ हुआ, जिससे वातावरण भक्तिमय हो उठा। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता मंच के संस्थापक लेफ्टिनेंट किशोर सिंह राठौर ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में सूबेदार अशोक मिश्रा उपस्थित रहे। डॉ कमलेश मलिक, संतोष पारीक विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दोनों सत्रों का संचालन रीता सिंह द्वारा प्रभावशाली ढंग से किया गया।

संस्था की संस्थापिका रीता सिंह , सह संस्थापक लेफ्टिनेंट किशोर सिंह राठौर व सभी अतिथियों एवं सोनिका शर्मा , चंद्रमोहन नीले , डॉ.शैलजा रेला ,डॉ.रामनिवास तिवारी आशुकवि निवाड़ी म.प्र., उषा उमेश गुप्ता 'उमा' ,भगवती सक्सेना गौड़ , डॉ कविता पनिया , राधेश्याम यादव सुदर्शन ,उगा कंसल , संजय द्विवेदी , आशा रानी शरण, डॉ नीरू पारीक, सुनीता तिवारी , मीनू परियानी आदि सभी प्रतिभागियों ने अपनी रचनाओं एवं विचारों के माध्यम से कार्यक्रम को अत्यंत सरहनीय एवं यादगार बना दिया। अंत में सोनिका शर्मा द्वारा सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया गया। जन गण मन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ ।

**रीता सिंह, बेंगलुरु - कर्नाटक**